अध्याय : 5

परिवार की प्रकृति एवं सम्बन्धों के प्रतिमान

परिवार की प्रकृति एवं सम्बन्धों के प्रतिमान

बाल मजदूरी परिवार की प्रकृति एवं सम्बन्धों के प्रतिमानों से महत्त्वपूर्ण रूप से सम्बद्ध है। जिन बच्चों को परिवार में अच्छे भोजन का अभाव, शुद्ध जल, रोशनी, राशन और स्वास्थ्य की सुविधाएँ अपने परिवारों में नहीं उपलब्ध हो पाती हैं वह इन सुविधाओं के लिए अन्य राहों की खोज में लग जाते हैं। परिवार की आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं बन पाती है कि माता–पिता बच्चों को मजदूरी के लिए न भेजें। विद्यालय भेजने के लिए उनके पास इतना धन नहीं रहता कि उनकी पुस्तकों एवं पोशाकों की व्यवस्था करें। बच्चों को काम पर भेजना गैर कानूनी तो है, फिर भी जीवन यापन की समस्या इतनी विकट है कि परिवार को इसे दरकिनार करना पड़ता है।

परिवार सामाजिक संरचना की छोटी एवं सर्वाधिक महत्वपूर्ण इकाई है। यह एक ओर व्यक्ति के पालन–पोषण, समाजीकरण और प्रस्थिति के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है, तो दूसरी ओर सामाजिक नियंत्रण को बनाए रखने एवं आर्थिक उपलब्धि में भी महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करती है। यह समाज की निरन्तरता को

बनाए रखने और सांस्कृतिक विरासत के हस्तांतरण का प्रमुख साधन है।

परिवार सभी समाजों और संस्कृतियों में पाया जाता है। परिवार का आधार सहयोग, प्रेम, त्याग एवं श्रद्धा आदि हैं। परिवार के सभी सदस्य भावनात्मक आधार पर एक–दूसरे से सम्बन्धित होते हैं। परिवार वह प्राथमिक एवं महत्वपूर्ण संस्था है जिसमें व्यक्ति का समाजीकरण होता है। दूसरे शब्दों में परिवार ही व्यक्ति को व्यक्तित्व प्रदान करता है। परिवार में ही व्यक्ति के चरित्र का निर्माण होता है। अन्य समितियों की तुलना में परिवार का आकार छोटा होता है। हमारे जीवन का संचालन भी परिवार के द्वारा होता है। परिवार सामाजिक संगठन की एक महत्वपूर्ण आधारशिला है। "भारत में परिवारों की सामान्य प्रवृत्ति संयुक्त अविभाजित परिवारों के रूप में स्वीकृत है।'[1]

वर्तमान अध्याय में उत्तरदाताओं के एकाकी एवं संयुक्त दो प्रकार के परिवारों में विभक्त किया गया है।

"संयुक्त परिवार उन लोगों का समूह है जिसमें सभी लोग एक छत के नीचे रहते हैं, एक ही स्थान का बना खाना खाते हैं और समान जायदाद के अधिकारी होते हैं तथा परिवार की सामान्य

---

1 के.एम. कपाड़िया: मैरिज एण्ड फेमिली इन इण्डिया, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, कलकत्ता, 1984, पृ. 283–284.

पूजा के साथ–साथ भाग लेते हैं।"[1] अन्य अर्थों में "संयुक्त परिवार एक ऐसा घर है जहाँ अभिभावक अपने शादीशुदा बच्चों और अन्य अविवाहित बच्चों या भाइयों तथा उनकी पत्नियों के साथ रहते हैं।"[2]

आर.पी. देसाई के अनुसार – "हम उस गृह को संयुक्त परिवार कहते हैं जिसमें एकाकी परिवार से अधिक (अर्थात् तीन से अधिक) के सदस्य रहते हैं और जिसके सदस्य एक दूसरे से सम्पत्ति, आय और पारस्परिक अधिकारों तथा कर्त्तव्यों द्वारा सम्बद्ध हो।"[3]

संयुक्त परिवार परिवर्तन की प्रक्रिया में टूट कर नाभिकीय परिवारों में विभक्त हो जाते हैं और नाभिक परिवारों में विवाह के बाद भी लड़के अपने माता–पिता के परिवार में ही बने रहते हैं तो ऐसे परिवार पुनः संयुक्त परिवार का रूप ग्रहण कर लेते हैं।

परिवार के प्रकार्यों में एक प्रमुख प्रकार्य बच्चों का पालन–पोषण है। प्रायः बाल्यकाल में उसका लालन–पालन परिवार द्वारा ही किया जाता है। वर्तमान समय में शिशुओं के लालन–पालन के लिए अनेक संगठनों का निर्माण किया गया है, किन्तु जो

---

1 आई. कर्वे : किनशिप आर्गनाइजेशन इन इण्डिया, डेक्कन कॉलेज, पूना, 1953, पृ. 10.

2 ए.डी. रॉसः द हिन्दू फेमिली इन इट्स अर्बन सेटिंग, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली, 1973, पृ. 34–35.

3 ए.आर. देसाई : अर्बन फेमिली एण्ड फेमिली प्लानिंग इन इण्डिया, पापुलर प्रकाशन, बाम्बे, 1980, पृ. 73–75.

भावनात्मक पर्यावरण बच्चों के विकास के लिए आवश्यक है, वह केवल परिवार ही प्रदान कर सकता है।

वर्तमान अध्ययन में परिवार की प्रकृति एवं सम्बन्धों के प्रतिमान को ज्ञात करने का प्रयास किया गया है। उत्तरदाताओं से प्राप्त जानकारी को निम्न सारणियों में दर्शाया गया है।

उत्तरदाताओं के परिवार का स्वरूप

भारतीय परिवार मूल रूप से संयुक्त परिवार के ही रूप में संरचित है। यह संयुक्तता न केवल आवास के आधार पर अपितु आर्थिक आधार पर भी परिलक्षित होती है। यद्यपि समकालीन भारत में, विशेष रूप से नगरों में, व्यवसायिक व आर्थिक दबावों के कारण एकाकी परिवारों की संख्या बढ़ रही है तथा संयुक्त परिवार अभी भी बने हुए हैं।

उत्तरदाताओं से परिवार का स्वरूप से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त की गयी, प्राप्त जानकारी को निम्न सारणी में दर्शाया गया है।

सारणी संख्या – 5.1

परिवार का स्वरूप सम्बन्धी उत्तरदाताओं के विचार

परिवार का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिशत
एकाकी	240	80.00
संयुक्त	60	20.00
योग	**300**	**100.00**

सारणी संख्या – 5.1 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि बाल श्रमिक मुख्यतः एकाकी परिवार से सम्बन्धित होते हैं जिनका प्रतिशत 80.00 है। जबकि मात्र 20.00 प्रतिशत उत्तरदाता एकाकी परिवार से सम्बद्ध है।

अतः स्पष्ट है कि अधिकांश (80.00 प्रतिशत) बाल श्रमिक एकाकी परिवार से सम्बद्ध है।

उत्तरदाताओं के अभिभावकों में शिक्षा का स्तर

शिक्षा की प्रकृति और इसके उद्देश्यों को स्पष्ट करते हुए ब्राउन एवं रूसेक ने कहा है कि "शिक्षा अनुभव की वह सम्पूर्णता है जो किशोर और वयस्क दोनों की अभिवृत्तियों को प्रभावित करती है तथा उनके व्यवहारों का निर्धारण करती है।"[1] इस परिभाषा में ब्राउन ने शिक्षा की तीन विशेषताओं की ओर संकेत किया है –

(क) शिक्षा का तात्पर्य सभी प्रकार के सैद्धान्तिक विचारों और व्यावहारिक अनुभवों से है।

(ख) शिक्षा का प्रमुख कार्य इसको ग्रहण करने वाले व्यक्तियों की मनोवृत्तियों में सुधार करना है।

---

1 ब्राउन एण्ड रूसेक :ओवर रेशियल एण्ड नेशनल मेनॉरिटीस, पृ. 12–13.

(ग) शिक्षा व्यक्ति के व्यवहारों पर नियन्त्रण रखने का सबसे प्रभावशाली माध्यम है।

वर्तमान समाजों में शिक्षा वैज्ञानिक दृष्टिकोण को लेकर चलती है। इसमें अनुभव, तर्क और यथार्थ का समावेश है। इसके फलस्वरूप शिक्षा द्वारा व्यक्ति यह अच्छी तरह समझ लेता है कि क्या करना उचित है और क्या अनुचित।

शिक्षित अभिभावक अपने बच्चों को शिक्षित बनाने के लिए प्रयासरत अवश्य होंगे। इसी उद्देश्य से यह जानने का प्रयास किया गया कि उत्तरदाताओं के अभिभावकों का शैक्षिक स्तर क्या है? उनसे प्राप्त जानकारी को निम्न सारणी में दर्शाया गया है।

सारणी संख्या – 5.2.1

माता का शैक्षिक स्तर

शैक्षिक स्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
अशिक्षित	114	38.00
प्राइमरी	78	26.00
मिडिल	70	23.33
हाईस्कूल	31	10.33
इण्टर या अधिक	7	2.34
योग	**300**	**100.00**

सारणी संख्या – 5.2.1 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि बाल श्रमिकों की माता का शैक्षिक स्तर अत्यन्त कम है। 38.00 प्रतिशत माताएँ अशिक्षित है। वहीं 26.00 प्रतिशत ने प्राइमरी तक की शिक्षा ग्रहण की है। 23.33 प्रतिशत माताओं ने मिडिल तक की शिक्षा प्राप्त की है। हाईस्कूल तक के शैक्षिक स्तर में उनका प्रतिशत 10.33 है, मात्र 2.34 प्रतिशत उत्तरदाताओं की माता इण्टर या उससे अधिक पढ़ी–लिखी हैं।

अतः स्पष्ट है कि अधिकांश (38.00 प्रतिशत) बाल श्रमिकों की माताएँ अशिक्षित हैं।

सारणी संख्या – 5.2.2

पिता का शैक्षिक स्तर

शैक्षिक स्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
अशिक्षित	143	47.66
प्राइमरी	89	29.67
मिडिल	48	16.00
हाईस्कूल	17	5.67
इण्टर या अधिक	3	1.00
योग	**300**	**100.00**

सारणी संख्या – 5.2.2 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि बाल श्रमिकों की माता के शैक्षिक स्तर की तुलना में पिता का शैक्षिक स्तर भी कम है। 47.66 प्रतिशत उत्तरदाता के पिता अशिक्षित है जबकि 29.67 प्रतिशत प्राइमरी तक की शिक्षा प्राप्त किए हुए हैं। वहीं 16.00 प्रतिशत एसे हैं जिन्होंने मिडिल तक की शिक्षा प्राप्त की है। 5.67 प्रतिशत हाईस्कूल एवं 1.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पिता इण्टर या उससे आगे की पढ़ाई किये हैं।

अतः हम निष्कर्ष तौर पर कह सकते हैं कि बाल श्रमिकों के माता–पिता का शैक्षिक स्तर काफी कम है। अतः अभिभावकों की साक्षरता का प्रभाव इस समस्या पर अवश्य पड़ता है।

उत्तरदाताओं के परिवार का पैतृक व्यवसाय

सामान्यतया परिवार के बच्चों की व्यावसायिक पसन्द अपने परिवार के व्यवसाय से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित होती है। यदि परिवार में कोई कार्य होता है तो घर के प्रत्येक सदस्यों के साथ बच्चे भी सहभागी बन जाते हैं या फिर पिता या घर के अन्य सदस्यों के कार्य स्थल पर जाकर श्रम करना प्रारम्भ करते हैं। प्रस्तुत प्रश्न के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया कि उत्तरदाताओं के परिवार का पैतृक व्यवसाय किस प्रकार का है।

सारणी संख्या – 5.3

उत्तरदाताओं के परिवार का पैतृक व्यवसाय

व्यवसाय	आवृत्ति	प्रतिशत
घरेलू व्यवसाय	7	2.33
मजदूरी	108	36.00
कृषि	97	32.33
नौकरी	88	29.34
योग	**300**	**100.00**

सारणी संख्या – 5.3 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि अध्ययन में सम्मिलित निदर्श में 2.33 प्रतिशत बाल श्रमिकों का पैतृक व्यवसाय घरेलू है, वही 36.00 प्रतिशत मजदूरी कार्य में संलग्न परिवार से सम्बन्धित हैं। उत्तरदाताओं के परिवार के पैतृक व्यवसाय में 32.33 प्रतिशत कृषि से सम्बन्धित हैं जबकि 29.34 प्रतिशत नौकरी करते हैं।

अतः स्पष्ट है कि अधिकांश (36.00) उत्तरदाताओं के परिवार का पैतृक व्यवसाय मजदूरी है।

उत्तरदाताओं के परिवार में कमाने वालों की संख्या

गरीबी एक सच्चाई है। लोग गरीब इसलिए हैं क्योंकि जीविकोपार्जन हेतु परिवार के सदस्यों के पास वांछित रोजगार नहीं है या फिर इस प्रकार का रोजगार है जिससे प्राप्त धन आजीविका चलाने के लिए अपर्याप्त है लेकिन भोजन सबको चाहिए। मजबूरी में इस प्रकार के परिवारों के बच्चों को भी काम करना पड़ता है। परिवार में जितने लोग उतने हाथों को मानने वाले वर्ग में रोटी की जरूरतें बाल विकास के मानदण्डों की तस्वीर और धूमिल कर देते हैं। उत्तरदाताओं के परिवार में कमाने वालों की संख्या से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त की गई, प्राप्त जानकारी को निम्नलिखित सारणी में दर्शाया गया है।

सारणी संख्या – 5.4

परिवार में कमाने वालों की संख्या

संख्या	आवृत्ति	प्रतिशत
1	48	16.00
2	98	32.66
3	103	34.33
4	35	11.67
4 से अधिक	16	5.34
योग	**300**	**100.00**

सारणी संख्या – 5.4 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि उत्तरदाताओं के परिवार में कमाने वाले संख्या के संदर्भ में 16.00 प्रतिशत परिवारों में कमाने वाले एकल हैं, 32.66 प्रतिशत उत्तरदाताओं के यहाँ कमाने वालों की संख्या दो है। सर्वाधिक प्रतिशत 34.33 है, जो तीन लोगों की संख्या का है। चार सदस्यों का प्रतिशत 11.67 प्रतिशत है, 5.34 प्रतिशत उत्तरदाताओं के यहाँ 4 से अधिक सदस्य कमाई में लगे हुए है।

अतः स्पष्ट है कि अधिकांश (34.33 प्रतिशत) उत्तरदाताओं के परिवार में कमाने वालों की संख्या 3 है।

परिवार की मासिक आय

किसी परिवार की मासिक आय न केवल परिवार की आर्थिक प्रस्थिति को निर्धारित करती है बल्कि यह तो परिवार के सामाजिक, मनोरंजनात्मक एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायक होती हैं। यदि आय संतोषजनक न हो तो विभिन्न प्रकार के उभय संकट की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। ऐसे में अधिक आय के लिए परिवार अपने उन सदस्यों को भी व्यवसाय में जाने हेतु प्रेरित करता है या स्वार्थी होकर उन पर दबाव आरोपित कर उन्हें श्रम करने हेतु तैयार करता है। ऐसा माना जाता है कि ज्यादातर बाल श्रमिक आर्थिक आवश्यकताओं के वशीभूत होकर बालश्रम करते

हैं जो किसी भी सभ्य समाज की विशेषता नहीं कही जा सकती। उत्तरदाताओं से उनके परिवार की मासिक आय से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त की गई, उनसे प्राप्त जानकारी को निम्नलिखित सारणी में प्रस्तुत किया गया है।

सारणी संख्या – 5.5

उत्तरदाताओं के परिवार की मासिक आय

मासिक आय (रूपयों में)	आवृत्ति	प्रतिशत
500 – 1000	3	1.00
1001 – 1500	104	34.67
1501 – 2000	148	49.33
2000 से अधिक	45	15.00
योग	**300**	**100.00**

सारणी संख्या – 5.5 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि 1.00 प्रतिशत बाल श्रमिकों के परिवार की मासिक आय 500 से 1000 रूपये है। 34.67 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार की मासिक आय 1001 से 1500 रूपये तक है जबकि सर्वाधिक 49.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार की मासिक आय 1501–2000 रूपये है तथा 15.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार की मासिक आय 2000 रूपये से अधिक है।

अतः स्पष्ट है कि अधिकांश (49.33) उत्तरदाताओं के परिवार की मासिक आय 1501–2000 रुपये है।

सारणी संख्या – 5.6

स्वयं की आय के उपयोग की प्रकृति

उपयोग की प्रकृति	आवृत्ति	प्रतिशत
परिवार पालन	90	30.00
माता–पिता	120	40.00
स्वतः खर्च	48	16.00
अन्य	42	14.00
योग	**300**	**100.00**

सारणी संख्या – 5.6 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि प्रस्तुत निदर्श में 30.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं द्वारा आय के उपयोग की प्रकृति प्रमुख से परिवार पालन है, वही अपनी आय को माता–पिता को प्रदान करने वालों का प्रतिशत 40.00 प्रतिशत है। स्वतः खर्च करने वाले 16.00 प्रतिशत उत्तरदाता हैं तथा अन्य का प्रतिशत 14 है।

अतः स्पष्ट है कि अधिकांश (40.00 प्रतिशत) उत्तरदाता स्वयं की आय माता–पिता को प्रदान करते हैं।

उत्तरदाताओं के घर का स्वरूप

मानव समाज की मूलभूत आवश्यकताओं में आवास एक प्रमुख आवश्यकता है। आवास की भूमिका न केवल भौतिक आपदाओं बल्कि सामाजिक विपत्तियों से बचाव में महत्वपूर्ण है। इतना ही नहीं यह व्यक्ति की सामाजिक, आर्थिक और प्रतिष्ठात्मक प्रस्थिति का एक प्रमुख मापदण्ड भी है।

आवासीय व्यवस्थापन के भौतिक संरचनात्मक दशाएँ होती हैं जिन्हें व्यक्ति अपनी सुरक्षा के लिए निर्मित करता है और उसमें वे सभी सेवाएँ उपकरण व साधन उपलब्ध होते हैं, जो व्यक्ति तथा उसके परिवार के शारीरिक व मानसिक कुशलता के लिए आवश्यक और अपेक्षित होता है। ए.आर.देसाई ने आवासीय दशाओं के महत्व का वर्णन करते हुए लिखा है कि आवास उन कार्यरत सदस्यों के लिए, जो कार्य से खाली समय घर में व्यतीत करते हैं। अपने व्यवसायिक भूमिका के दक्षतापूर्ण निभाने हेतु शान्तियुक्त प्रान्त करने का महत्वपूर्ण स्थान है। यह वह स्थान है, जहाँ पर कामसूत्र सुहृदय, अन्तरंग गरिमामय तथा प्राथमिक भावनामय यौन सम्बन्ध का अनुभव करके जीवन उन्मेलित करने की अपेक्षा करता है।[1]

---

1 ब्राउन एण्ड रूसेक :ओवर रेशियल एण्ड नेशनल मेनॉरिटीस, पृ. 12.

शारीरिक और मानसिक सुरक्षा हेतु घर उपयुक्त स्थल है। बच्चों को अत्यधिक सहायता की आवश्यकता होती है। ऐसे में बाल श्रमिकों के सदर्भ में उनके निवास के स्वरूप को जानने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत जानकारी को निम्नलिखित सारणी में प्रस्तुत किया गया है।

सारणी संख्या – 5.7

उत्तरदाताओं के घर का स्वरूप

घर का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिशत
कच्चा	76	25.33
पक्का	30	10.00
अर्द्धमिश्रित	194	64.67
योग	**300**	**100.00**

सारणी संख्या – 5.7 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि अधिक बाल मजदूर 25.33 प्रतिशत कच्चे मकानों में रहते हैं जबकि मात्र 10.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं के घर का स्वरूप पक्का है तथा 64.67 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे हैं जो अर्द्धमिश्रित घरों में निवास करते हैं।

अतः स्पष्ट है कि अधिकांश (64.67 प्रतिशत) उत्तरदाताओं के आवास का स्वरूप कच्चा–पक्का अर्द्धमिश्रित है।

घर में प्रकाश की उपलब्धता

उत्तरदाताओं से उनके निवास में प्रकाश की उपलब्धता किस प्रकार की है, यह जानने का इसलिए प्रयास किया गया है कि जिससे उनके जीवन का स्तर का वास्तविक चित्रण हो सके। हालाँकि मिट्टी के तेल से बेहतर बिजली की व्यवस्था होती है परन्तु किसी व्यक्ति द्वारा खर्च करने की एक सीमा होती है जिसके आधार पर वह अपने जीवन स्तर को अनुकूल बनाने का प्रयास करता है। उत्तरदाताओं से प्राप्त जानकारी को निम्नलिखित सारणी में प्रस्तुत किया गया है।

सारणी संख्या – 5.8

घर में प्रकाश की उपलब्धता

प्रकाश की व्यवस्था	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	203	67.67
नहीं	97	32.33
योग	**300**	**100.00**

सारणी संख्या – 5.8 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि अध्ययन में लिये गये निर्देशों में 67.67 प्रतिशत उत्तरदाता प्रकाश हेतु विद्युत की व्यवस्था एवं 32.33 प्रतिशत के अनुसार प्रकाश हेतु विद्युत की व्यवस्था नहीं है।

अतः स्पष्ट है कि अधिकांश (62.67 प्रतिशत) उत्तरदाताओं के प्रकाश के लिए विद्युत की व्यवस्था है।

पेयजल का स्रोत

पीने का पानी नागरिक की मूलभूत आवश्यक है और जिसकी समस्या से शहरी आबादी सर्वाधिक प्रभावित होती है। उत्तरदाताओं के परिवार में पेयजल के कौन से स्रोत प्रयोग में लाए जाते हैं, यह जानने का प्रयास किया गया है। उत्तरदाताओं से प्राप्त जानकारी को निम्नलिखित सारणी में प्रस्तुत किया गया है।

सारणी संख्या – 5.9

पेयजल का स्रोत

स्रोत	आवृत्ति	प्रतिशत
कुआँ	81	27.00
नगरपालिका का नल	135	45.00
हैण्डपम्प	66	22.00
अन्य कोई	18	6.00
योग	**300**	**100.00**

सारणी संख्या – 5.9 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि 45.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं द्वारा प्रयोग में लाए जाने वाले पेयजल के स्रोत में नगरपालिका का नल प्रमुख है जबकि 27.00 प्रतिशत

उत्तरदाता कुएँ के माध्यम से जल प्राप्त करते हैं तथा 22.00 प्रतिशत उत्तरदाता पेयजल हेतु हैण्डपम्प का प्रयोग करते हैं एवं 6.00 प्रतिशत उत्तरदाता अन्य माध्यमों से जल प्राप्त करते हैं।

अतः स्पष्ट है कि अधिकांश (45.00 प्रतिशत) उत्तरदाता पेयजल के लिए नगरपालिका के नल का इस्तेमाल करते हैं।

शौच हेतु स्थान की प्रकृति

इस सन्दर्भ में समाज में बाल श्रमिकों की स्थिति को शौचालय की उपलब्धता तथा प्रयोग की दशा के आधार पर जानने का प्रयास किया गया है। दैनिक आवश्यकता के तौर पर शौच एक अलग स्थान रखता है साथ ही इसके लिए स्थान चयन भी व्यक्ति के धन, स्थान, स्वच्छता के मापदण्ड के आधारों पर भिन्न–भिन्न होता है।

सारणी संख्या – 5.10

शौच हेतु स्थान की प्रकृति

स्थान की प्रकृति	आवृत्ति	प्रतिशत
सुलभ शौचालय	6	2.00
खुला स्थान	246	82.00
घरेलू व्यवस्था	48	16.00
योग	**300**	**100.00**

सारणी संख्या – 5.10 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि 82.00 प्रतिशत उत्तरदाता शौच हेतु स्थान चयन की प्रकृति से सम्बन्धित खुले स्थान का प्रयोग करते हैं जबकि 16.00 प्रतिशत उत्तरदाता इसके लिए घरेलू व्यवस्था का चयन करते हैं तथा मात्र 2.00 प्रतिशत उत्तरदाता सुलभ शौचालय का प्रयोग करते हैं।

अतः स्पष्ट है कि अधिकांश (82.00 प्रतिशत) उत्तरदाता शौच के लिए खुले स्थान का प्रयोग करते हैं।

पारिवारिक सदस्यों के मध्य झगड़े

अक्सर पाया जाता है निम्न स्तरीय परिवारों में झगड़े होते रहते हैं। इनका असर बालकों के मस्तिष्क पर पड़ता है और वह इससे उद्वेलित होते हैं। उत्तरदाताओं से जानकारी प्राप्त की गयी कि क्या उनके परिवार के सदस्यों में झगड़े होते हैं। प्राप्त जानकारी को निम्न सारणी में दर्शाया गया है।

सारणी संख्या – 5.11

परिवार में झगड़े

विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	145	48.33
नहीं	155	51.67
योग	**300**	**100.00**

सारणी संख्या – 5.11 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि 48.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार उनके परिवार के सदस्यों के मध्य झगड़े होते हैं एवं 51.67 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार परिवार के सदस्यों के मध्य झगड़े नहीं होते हैं।

अतः स्पष्ट है कि अधिकांश (51.67 प्रतिशत) उत्तरदाताओं के परिवार के सदस्यों के मध्य झगड़े नहीं होते हैं।

गाली (अपशब्द) का प्रयोग

उत्तरदाताओं से जानकारी प्राप्त की गयी कि परिवार के सदस्य अक्सर गाली (अपशब्द) देते हैं। प्राप्त जानकारी को निम्न सारणी में दर्शाया गया है–

सारणी संख्या – 5.11

गाली (अपशब्द) का प्रयोग

गाली का प्रयोग	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	170	56.67
नहीं	130	43.33
योग	**300**	**100.00**

सारणी संख्या – 5.12 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि 56.67 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार उनके परिवार के सदस्य गाली (अपशब्द) का प्रयोग करते हैं एवं 43.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार नहीं करते हैं।

अतः स्पष्ट है कि अधिकांश (56.67 प्रतिशत) उत्तरदाताओं के परिवार के सदस्य गाली (अपशब्द) का प्रयोग करते हैं।